राज जौनपुरी

1

लबों से चूम के पानी शराब कर देगा
निगाह-ए-नाज़ से मौसम शबाब कर देगा

न देख उसको कि छलिया बहुत है, ज़ालिम है
निगाह-ए-शौक़ से खानाख़राब कर देगा

नशे की लत न लगाना कभी भी जीवन में
अजीब शय है ये जीवन ख़राब कर देगा

करोगे लाख जतन सच को सच बताने की
वो एक झूठ से बस लाज़वाब कर देगा

मुख़ालिफ़त जो किया तुमने हुक़्मरानी का
सज़ा-ए-मौत का फिर इंतिख़ाब कर देगा

नया रईस हो उछलो न इस क़दर वर्ना
तेरा गुरूर ही तुझको तुराब कर देगा

न छेड़ 'राज' वो नाज़ुक मिज़ाज लगता है
हुआ ख़फ़ा तो तुम्हें बेनक़ाब कर देगा

2

नज़र नज़र से पिलाओ की रात बाक़ी है
ये जाम-ए-इश्क़ उठाओ की रात बाक़ी है

गुजर न जाए कहीं रात बातों बातों में
ज़रा करीब तो आओ की रात बाक़ी है

हसीन रात है ख़्वाहिश मचल उठी दिल में
निगाह-ए-नाज़ दिखाओ की रात बाकी है

जवां हैं हम भी, जवां दिल है, धड़कनें भी जवां
मता-ए-इश्क़ लुटाओ की रात बाक़ी है

निकल न जाए कहीं जां हमारी धड़कन से
कि दिल पे हाथ लगाओ की रात बाक़ी है

शवाब पर है ये महफ़िल तो 'राज' यूँ ही करो
कोई ग़ज़ल ही सुनाओ की रात बाक़ी है